'कर्मभूमि' उपन्यास राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों से प्रेरित है' - इस कथन की युक्ति-संगत व्याख्या कीजिये।

4. 'चित्रलेखा' उपन्यास में चित्रित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

कथावस्तु की दृष्टि से 'चित्रलेखा'! उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए।

5. 'आपका बंटी' एक दरकते परिवार का आईना है, कथन के आधार पर उपन्यास में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिये।

[This question paper contains 4 printed pages.]

06/06/2024
M

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1762 **H**

Maitreyi College * LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या करें : (7 + 8 = 15)

(क) "पापा ने इस बार उसे चिट्ठी लिखने को कहा था। पर उसने नहीं लिखी। लिखना तो खूब अच्छी तरह जानता है, लिख भी सकता है। पर तब वह सारी बातें समझता कहाँ था? तब तो उसे यह भी नहीं मालूम था कि मम्भी-पापा में पक्कीवाली कुट्टी

P.T.O.

हो गई है। पर अब कैसे लिख सकता है भला! वह पूरी तरह मम्मी की तरफ है और मम्मी से उनकी कुट्टी है तो फिर बंटी से भी है। ऐसा ही तो होता है"।

अथवा

"उन्माद और ज्ञान में जो भेद है, वही वासना और प्रेम में है। उन्माद अस्थायी होता है और ज्ञान स्थायी। कुछ क्षणों के लिए ज्ञान का लोप हो सकता है, पर वह मिटता नहीं। जब पागलपन का प्रहार होता है, ज्ञान लोप होता हुआ विदित होता है; पर उन्माद बीत जाने के बाद ही ज्ञान स्पष्ट हो जाता है। यदि ज्ञान अमर नहीं है, तो प्रेम भी अमर नहीं है, पर मेरे मत में ज्ञान अमर है- ईश्वर का एक अंश है और साथ ही प्रेम भी"।

(ख) "आनंद के अवसर पर हम अपने दुखों को भूल जाते हैं। हाफ़िज़ जी को सलीम के सिविल-सार्विस से अलग होने का, समरकान्त को नैना की मृत्यु का और सेठ धनिराम को पत्र-शोक का रंज कम न था, पर इस समय सभी प्रसन्न थे। किसी संग्राम में विजय पाने के बाद योद्धागण मरनेवालों के नाम को रोने नहीं बैठते। उस वक्त तो सभी उत्सव मनाते हैं। शादियाने बजते हैं, महफिलें जमती हैं, बधाइयाँ दी जाती हैं। रोने के लिए हम एकांत ढूंढते हैं, हँसने के लिए अनेकांत"।

अथवा

कुमारगिरी चित्रलेखा को समझ न सके। चित्रलेखा में एक असाधारण व्यक्तित्व था। और वह व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली था! कुमारगिरि के हृदय में एक बार फिर यह विचार आया कि वे चित्रलेखा को दीक्षा देने से इंकार कर दें। उन्होने चित्रलेखा से कहना आरंभ कर दिया "देवी चित्रलेखा! मैं तुम्हें समझने में असमर्थ हूँ। तुम्हारा व्यक्तित्व मेरे व्यक्तित्व से नीचा नहीं है। इसलिए दीक्षा देना मेरा कहाँ तक उचित होगा, इसका निर्णय करना होगा। जब तक मैं इसका निर्णया न कर लूँ..."।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें : (7 + 8 = 15)

(क) मैत्रेयी पुष्पा

(ख) जैनेन्द्र

(ग) अज्ञेय

(घ) प्रेमचंद

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास में वर्णित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा